ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 156-159**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

भारत में मादक द्रव्य व्यसन की समस्या एवं कारण

ब्यूटी कुमारी

शोधअध्येत्री–राजनीति विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार) भारत

Received-04.11.2024, Revised-10.11.2024, Accepted-16.11.2024 **E-mail : akbar786ali888@gmail.com**

सारांशः संसार के विभिन्न देशों तथा भारत में मादक द्रव्य व्यसन का इतिहास भी बहुत प्राचीन है। हमारे समाज के सामान्य वर्गों में भाँग, गाँजा और चरस के उपयोग को कभी एक समस्या के रूप में नहीं देखा गया। भाग के बारे में तो एक सामान्य धारणा यह रही कि यह थकान मिटाती है तथा भूख बढ़ाती है। इसमें फलस्वरूप शैव सम्प्रदाय के बहुत–से अनुयायी भाँग को धार्मिक स्वीकृत भी प्रदान करने लगे। गाँजा और चरस का उपयोग यहाँ साधु–सन्तों में काफी लोकप्रिय रहा है। ऐसा विश्वास किया जाने लगा कि संसार से विरक्त होने और आध्यात्मिक चिन्तन करने के लिए गाँजे और चरस का सेवन किसी न किसी रूप में उपयोगी है। तात्पर्य यह है कि संसार के विभिन्न देशों तथा भारत में बीसवीं शताब्दी के पहले तक मादक द्रव्यों के उपयोग को कभी एक समस्या के रूप में नहीं देखा गया।

कुंजीभूत शब्द– मादक द्रव्य व्यसन, समाज, भाँग, गाँजा, चरस, शैव सम्प्रदाय, आध्यात्मिक चिन्तन, उत्पादन, आयात–निर्यात

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ से, जब अफीम से बनने वाले विभिन्न मादक पदार्थों और शराब के उपयोग से उत्पन्न दोष संसार के सामने स्पष्ट होना आरम्भ हुए, तब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1930 में एक 'डेन्जरस ड्रग्स ऐक्ट' पास किया गया। इसी समय से भारत में भी नशीले पदार्थों के उपयोग से उत्पन्न दोषों की ओर चिकित्सकों और समाज सुधारकों का ध्यान आकृष्ट होना आरम्भ हुआ। इसके फलस्वरूप महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने शराब के साथ ही गाँजा, भाँग, चरस और अफीम के ठेकों पर भी धरने देकर इन दुकानों को बन्द करने की जोरदार माँग करना आरम्भ कर दी। बाद में हमारा देश जब स्वतन्त्र हुआ तो नशीले पदार्थों के सेवन पर अधिक नियन्त्रण लगाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर अनेक विचार गोष्ठियाँ आयोजित की गयीं। दिल्ली में सन् 1949 की विचारगोष्ठी में यह निर्णय लिया गया कि सन् 1959 तक चिकित्सा उद्देश्यों को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में अफीम की बिक्री पूरी तरह बन्द कर दी जायेगी। सन् 1956 की शिमला विचार गोष्ठी में न केवल अफीम, गाँजे और भांग के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाना तय किया गया बल्कि इनके उत्पादन और आयात–निर्यात पर भी कड़ी निगरानी रखने का प्रस्ताव पारित हुआ। इस गोष्ठी में उन लोगों को सरकारी अस्पतालों में उपचार की सुविधा देने की बात कही गयी, जो अफीम सेवन करने के अभ्यस्त हो चुके थे। सन् 1959 की हैदराबाद विचारगोष्ठी में भी उपर्युक्त निर्णयों को पुनः दोहराया गया, यद्यपि नशीले पदार्थों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने का समय सन् 1959 के स्थान पर 1961 कर दिया गया।

इन सभी निर्णयों के बाद भी वास्तविकता यह है कि भारत में नशीले पदार्थों के सेवन में निरन्तर वृद्धि होती रही। गत 15–20 वर्षों से इसका अत्यधिक गम्भीर रूप नशीली दवाइयों के बढ़ते हुए सेवन के रूप में स्पष्ट हुआ है। इस समस्या का आरम्भ हिप्पी संस्कृति से प्रभावित उन नवयुवकों द्वारा हुआ जो एक ओर अपने तनाव और कुण्ठा को दूर करने के लिए हशीश, चरस और गाँजे का उपयोग करने लगे और दूसरी ओर पश्चिमी सभ्यता के सड़े–गले मूल्यों को अपनाने के लिए नशीले पदार्थों के उपयोग को आधुनिकता की कसौटी मानने लगे। आरम्भ में मादक द्रव्य व्यसन की समस्या चरस और गाँजे के उपयोग तक ही सीमित रही लेकिन धीरे–धीरे इसने एक गम्भीर समस्या का रूप धारण कर लिया। वर्तमान स्थिति यह कि नगरों के युवा वर्ग में हीरोइन, एल. एस. डी. एस. टी. पी. तथा एम्फीटामाइस का प्रयोग भी तेजी से बढ़ता जा रहा है। हाल ही में मादक पदार्थों में सबसे अधिक घातक पदार्थ स्मैक के उपयोग ने समाज के सामने एक गम्भीर चुनौती उत्पन्न कर दी है। स्मैक एक सस्ता पाउडर है जिसके उपयोग से व्यक्ति को आरम्भ में आनन्द उल्लास, हल्कापन और मानसिक सुख प्राप्त होता है। लेकिन एक बार भी इसका उपयोग कर लेने के बाद व्यक्ति इसका आदी बनने लगता है। बाद में व्यक्ति यदि इसे छोड़ना चाहता है तो उसके शरीर में ऐंठन होने लगती है, उल्टियाँ आती हैं, सिर चकराता है, गर्दन में दर्द होने लगता है। तथा कंपकपी छूटने के साथ ही पसीना आने लगता है। इनसे छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति पुनः स्मैक का सेवन करता है और इस प्रकार यह व्यसन एक प्राणघातक समस्या का रूप ले लेता है। सबसे गम्भीर बात तो यह है कि प्रतिदिन श्रम करके अपने परिवार के लिए किसी प्रकार आजीविका उपार्जित करने वाला मेहनतकश वर्ग भी इसका तेजी से शिकार होता जा रहा है।

भारत में मादक द्रव्य व्यसन किस सीमा तक फैल चुका है, इसके बारे में कोई निश्चित आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं। समय–समय पर किये जाने वाले व्यक्तिगत अध्ययनों से जो तस्वीर सामने आती है, उससे पता चलता है कि महानगरों में स्थित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के लगभग 40 प्रतिशत छात्र और 18 प्रतिशत छात्राएँ किसी न किसी तरह के मादक द्रव्यों का शिकार हैं। ऐसा अनुमान है कि सन् 1981 तक जो लोग मादक द्रव्यों का उपयोग करते थे, उनमें केवल 3 प्रतिशत ही हीरोइन तथा स्मैक के व्यसनी थे जबकि सन् 1995 तक ऐसे लोगों का प्रतिशत 72 तक पहुँच गया। पुलिस के आँकड़ें बताते हैं कि सन् 1981 में स्मैक का उपयोग करने के मामले में जहाँ केवल एक व्यक्ति पकड़ा गया था, वहीं सन् 1996 में ऐसे 4,100 से भी अधिक मामलों की रिपोर्ट हुई। हाल ही में यह चौंका देने वाला तथ्य सामने आया कि दिल्ली की घनी बस्तियों में रहने वाले लगभग 25 प्रतिशत लोग स्मैक पीने लगे हैं।[1] यह लोग वे हैं जो दिन भर में कठिनता से 60–70 रुपये कमाकर सारा रुपया स्मैक में समाप्त कर देते हैं और उनका परिवार उन्हें स्मैक से इसलिए अलग नहीं कर पाता कि इसके बिना प्राणों का ही खतरा पैदा हो सकता है। आज मादक द्रव्यों के प्रयोग में कितनी तेजी

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

से वृद्धि होती जा रही है, इसका अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इस समय कलकत्ता में 70 हजार मुम्बई में 95 हजार तथा दिल्ली में 1 लाख से भी अधिक लोग नशीले पदार्थों का उपयोग करने के आदी बन चुके हैं।

मादक द्रव्य व्यसन की समस्या को समझने के लिए इस तथ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि इस समस्या का सम्बन्ध समाज के किन वर्गों से है। साधारणतया ऐसा समझा. जाता है कि मादक द्रव्यों का सबसे अधिक उपयोग समाज के सम्भ्रान्त वर्ग द्वारा किया जाता है। यह सामान्यीकरण विदेशी ढंग से बनायी गयी शराब के बारे में तो ठीक हो सकता है लेकिन मादक द्रव्य व्यसन की वर्तमान समस्या जिन नशीली दवाइयों के उपयोग से सम्बन्धित है, उस पर यह निष्कर्ष सही प्रमाणित नहीं होता। नशीले पदार्थों का सर्वाधिक उपयोग शारीरिक श्रम करके जीविका उपार्जित करने वाले युवा वर्ग तथा कॉलेजों एवं विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं में देखने को मिलता है। इनमें से अधिकांश संख्या उन युवाओं की है जो स्वभाव से चिन्तित रहने वाले होते हैं अथवा अपने व्यक्तित्व की कमियों से सदैव परेशान रहते हैं। आरम्भ में यह लोग अपनी चिन्ताओं और हीनता की भावना को दूर करने के लिए मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं और बाद में वह उनकी आदत बन जाती है। इन युवाओं में दूसरी श्रेणी मानसिक तनावों से पीड़ित रहने वाले लोगों की है। ऐसे लोग एक बार जब मादक द्रव्यों का उपयोग शुरू कर देते हैं, तब बाद में इसके बिना वे न तो अपने मानसिक सन्तुलन को स्थिर रख पाते हैं और न ही कोई कार्य कर पाते हैं। अन्तिम श्रेणी उन युवाओं की है जो मादक द्रव्यों का उपयोग केवल मनोरंजन और आधुनिकता के चिन्ह के रूप में करते हैं। इसी वर्ग के मादक द्रव्य व्यसन ने आज सबसे गम्भीर समस्या का रूप धारण कर लिया है। इस समस्या का एक दूसरा गम्भीर पक्ष यह है कि आज युवा वर्ग के अतिरिक्त लड़कियों और महिलाओं में भी नशे की गोलियों और स्मैक का सेवन बढ़ता जा रहा है। यह समस्या बड़े महानगरों से आरम्भ हुई थी लेकिन आज मध्यम स्तर के बरेली जैसे नगर में भी मादक पदार्थों की गिरफ्त में आने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।[2]

जीवशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों तथा अर्थशास्त्रियों ने मादक द्रव्य व्यसन के कारणों का विश्लेषण भिन्न–भिन्न रूप से किया है। जीवशास्त्री यह मानते हैं कि कुछ व्यक्तियों की जीव–रचना व्यक्ति से मादक पदार्थों के उपयोग की माँग करती है। एक बार इसकी पूर्ति हो जाने पर व्यक्ति धीरे–धीरे इसका आदी हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मादक पदार्थों का उपयोग करने वाला व्यक्ति मानसिक रूप से दुर्बल तथा अस्वस्थ व्यक्ति होता है। व्यक्ति में आत्मसंयम, स्थिरता तथा मानसिक सन्तुलन की कमी के कारण वह स्वयं को असुरक्षित अनुभव करता है। यही मनोभाव उसे मादक द्रव्यों का प्रयोग करने का प्रोत्साहन देते हैं। समाजशास्त्रियों का विचार है कि मादक द्रव्यों के प्रयोग का कारण एक दूषित सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण है जो व्यक्ति में लालसा, अनुरूपता तथा विचलित मूल्यों को बढ़ाकर उसे मादक पदार्थों के सेवन की ओर ले जाता है। इस दृष्टिकोण से मादक द्रव्य व्यसन की समस्या को अनेक कारकों की पृष्ठभूमि में ही समझा जा सकता है। बोन्जर, स्टरलिंग तथा काल्टिन जैसे विद्वानों ने भी अनेक कारणों को मादक द्रव्य व्यसन के लिए उत्तरदायी माना है।3 इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारत में मादक द्रव्य व्यसन का सम्बन्ध मुख्यतः समाज के युवा वर्ग से है, इसलिए इसी वर्ग की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए इस समस्या के कारणों का विश्लेषण किया जा सकता है। इस तथ्य को सभी लोग स्वीकार करते हैं कि भारत का युवा वर्ग आज नये परिवेश ग्रहण कर रहा है। सामाजिक मूल्यों तथा पर्यावरण सम्बन्धी कारकों में होने वाला तीव्र परिवर्तन उसकी विचारधाराओं एवं जीवन की मान्यताओं में परिवर्तन उत्पन्न कर रहा है। इन दशाओं में निम्नांकित कारण युवा वर्ग में मादक पदार्थों के प्रति बढ़ते हुए उपयोग के लिए अधिक उत्तरदायी हैं।

संगति का प्रभाव– जीवन के अनुभवों के अभाव तथा स्वास्थ्य के प्रति उदासीनता की प्रवृत्ति में युवकों के लिए अपने साथी ही सबसे बड़ा आदर्श होते हैं। एक व्यक्ति जब अपने युवा साथी को मादक पदार्थ का उपयोग करते हुए देखता है तो उससे अपनी अनुरूपता सिद्ध करने के लिए वह भी मादक द्रव्यों को एक के साधन के रूप में ग्रहण कर रोचक कार्य, नये अनुभव तथा मिलनसारिता लेता है। आज कॉलेजों और यूनिवर्सिटी के छात्रों में मादक द्रव्य व्यसन को बढ़ाने की प्रवृत्ति में इस कारक का योगदान सम्भवतः सबसे अधिक है। दिल्ली की घनी बस्तियों में किये गये एक सर्वेक्षण में भी अनेक युवकों ने यह स्वीकार किया कि नशे की गोलियों और स्मैक के उपयोग को उनके दोस्तों द्वारा ही आरम्भ करवाया गया।

निराशापूर्ण जीवन– वर्तमान युवा पीढ़ी तरह–तरह की निराशाओं और कुण्ठाओं से ग्रस्त है। शिक्षा की उद्देश्यहीनता, सांस्कृतिक मूल्यों तथा भौतिकता की चकाचौंध के बीच की खाई, अभावमय लेकिन आडम्बरपूर्ण जीवन उसकी निराशाओं के प्रमुख कारण हैं। इन कठिनाइयों के बीच युवा वर्ग का मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। व्यक्तित्व जब विकारयुक्त हो जाता है तो उसके दिवास्वप्न और आकांक्षाएं पहले से भी अधिक बढ़ जाती हैं। इन परिस्थितियों से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए बहुत–से युवा मादक पदार्थों को एक सहारे के रूप में ग्रहण कर लेते हैं।

निवास की दोषपूर्ण दशाएँ– बहुत–से युवक मादक पदार्थों का उपयोग इसलिए आरम्भ कर देते हैं कि उनका मकान बहुत गन्दा, अन्धकारपूर्ण और सीलन से भरा होने के कारण वे उसमें अधिक समय तक नहीं रह सकते। घनी बस्ती में मकान स्थित होने के कारण पड़ोस की अनैतिकता अथवा दूसरे व्यक्तियों द्वारा मादक पदार्थों का सेवन उन्हें भी इनका सेवन करने की प्रेरणा देता है। निवास की दोषपूर्ण दशाओं में अक्सर युवक अपनी शारीरिक तथा मानसिक थकान को नशीले पदार्थों के द्वारा दूर करने के प्रयत्न करने लगते हैं।

फैशन– आधुनिकता के वर्तमान युग में युवा वर्ग का एक बड़ा भाग नशे को फैशन के रूप में देखने लगा है। महानगरीय संस्कृति में अक्सर मादक पदार्थों का सेवन न करने वाले युवक को एक पिछड़े हुए व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। दफ्तरों, कॉलेजों तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध युवक अक्सर हीन भावना का शिकार होते हैं कि मादक पदार्थों का सेवन करके वे अपनी मित्रता

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

का घेरा बढ़ा सकते हैं, दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं अथवा अधिक सम्पन्न और संभ्रान्त समझे जा सकते हैं। यह भावना केवल लड़कों को ही नहीं बल्कि बहुत–सी लड़कियों को भी मादक द्रव्यों के व्यसन की ओर आकर्षित कर रही है। पॉप संगीत और पश्चिमी ढंग के आयोजनों के अवसर पर अधिकांश युवकों और युवतियों द्वारा नशे में झूमते हुए इसका आनन्द लेना इस स्थिति की वास्तविकता को स्पष्ट करता है।

नगरीकरण– गाँव का जीवन इस प्रकार का नहीं है जो व्यक्ति को मादक पदार्थों के सेवन की प्रेरणा दे सके। इसके विपरीत नगरीय सभ्यता की चकाचौंध में आन्तरिक और वैयक्तिक सम्बन्धों का नामोनिशान भी नहीं होता। यहाँ हर व्यक्ति औपचारिकता का मुखौटा लगाये अपने काम में ही व्यस्त रहता है। इस व्यस्तता, औपचारिकता और शोर से उत्पन्न तनावों को कम करने के लिए युवा वर्ग मादक पदार्थों की ओर आकर्षित होता जा रहा है। सच तो यह है कि आज एक अलग नगरीय संस्कृति विकसित हो गयी है। जिसमें माता–पिता के पास अपने बच्चों के पास बैठकर बात करने का समय नहीं होता और बच्चे मादक पदार्थों का सेवन करके जिन अभद्र व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं, उसकी जिम्मेदारी मात्र उन्हीं का दायित्व समझा जाता है। साधारणतया माता–पिता अथवा परिवार के दूसरे सदस्य किसी युवा द्वारा हीरोइन अथवा स्मैक के सेवन को जब तक जान पाते हैं; स्थिति नियन्त्रण के बाहर हो चुकी होती है।

मनोवैज्ञानिक कारण– अनेक दशाएँ युवा वर्ग पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालकर उन्हें मादक पदार्थों के सेवन के रास्ते पर ले जाती हैं। हर्टन ने बहुत–सी जनजातियों का अध्ययन करके यह निष्कर्ष दिया कि जिस संस्कृति में असुरक्षा और तनाव की मात्रा जितनी अधिक होती है, वहाँ मादक द्रव्यों का उपयोग उतना ही अधिक होता है। वर्तमान युग में मरती हुई परम्परागत संस्कृति तथा अर्द्धविकसित भौतिक संस्कृति ने युवा वर्ग को मानसिक रूप से इतना तनावपूर्ण बना दिया है कि उनका मादक पदार्थों की ओर आकर्षित हो जाना स्वाभाविक प्रतीत होता है। लीण्डस्मिथ ने बताया कि स्वयं को असामान्य समझने वाले व्यक्ति श्सामान्यश बनने की लालसा में मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं। यह कथन भी भारत के युवा वर्ग की मानसिकता के आधार पर मादक द्रव्य व्यसन के कारण को स्पष्ट करता है। आज लाखों की संख्या में ग्रामीण युवक नगरों में आकर रहते हैं। शुरू में वे स्वयं को नगर के युवकों से कुछ भिन्न पाते हैं लेकिन शीघ्र ही वे उन्हीं के आचरणों का अनुकरण करके उनसे अपनी समानता स्थापित करने लगते हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण युवकों में भी मादक द्रव्य व्यसन को प्रोत्साहन दे रही है।असामान्य व्यक्तित्व कृ कुछ व्यक्तियों में ऐसे व्यक्तित्व सम्बन्धी दोष होते हैं कि वे सरलता से मादक पदार्थों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। ऐसे लोगों को श्मानसिक रूप से विकारयुक्त व्यक्तिश कहा जाता है। ऐसे लोग प्रत्येक कठिनाई का सरल से सरल समाधान ढूँढ़ने का प्रयत्न करते हैं। उनकी समझ में ऐसी बातें बहुत सरलता से आ जाती हैं कि मादक पदार्थ का सेवन करने से वे अपने मित्रों में अधिक लोकप्रिय बन सकते हैं, वे अधिक चित्ताकर्षक दिखायी देंगे, उनके काम करने की कुशलता बढ़ जायेगी अथवा यह कि इससे वे अधिक अच्छा नेतृत्व कर सकेंगे। इन धारणाओं के कारण • असामान्य व्यक्तित्व के युवा अपनी ही कमजोरियों को छिपाने के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग आरम्भ कर देते हैं। बाद में इससे जब वे स्वयं क्षुब्ध हो जाते हैं, तब उनका सही मार्ग–निर्देशन करने वाला कोई नहीं मिलता। इस प्रकार नशे की दुनिया ही उनका सहारा रह जाती है।

प्रतिकूल परिस्थितियाँ– कभी–कभी व्यक्ति के सामने ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियाँ आ जाती हैं जिनमें उसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। उदाहरण के लिए, बेकारी, परिवार में किसी प्रियजन की लम्बी बीमारी, निरन्तर असफलता, प्रेम में निराशा, पारिवारिक कलह, किसी प्रियजन से गहरी उपेक्षा या तिरस्कार, अकारण मिलने वाला दुर्व्यवहार तथा जुए में हार आदि इसी प्रकार की परिस्थितियाँ हैं। इन परिस्थितियों में भी सभी व्यक्ति मादक पदार्थों के शिकार नहीं हो जाते बल्कि जैसा कि इलिएट और मैरिल का कथन है, "वे लोग जो बहुत संकोची, भावुक, सामाजिक दृष्टि से असुरक्षित तथा कठिनाइयों का सामना करने में असमर्थ होते हैं, मादक पदार्थों के सेवन को एक विकल्प के रूप में स्वीकार कर लेते हैं।4 धीरे–धीरे यह स्थिति उन्हें मादक पदार्थों के सेवन का अभ्यस्त बना देती है।

नैतिक मूल्यों में पतन– प्रत्येक व्यक्ति जो देखता और सुनता है, उसका उसके आचरणों पर अनिवार्य रूप से प्रभाव पड़ता है। वर्तमान युग में वे नैतिक मूल्य बहुत तेजी से कमजोर पड़ते जा रहे हैं जो नशीले पदार्थों के उपयोग तथा इसी प्रकार की दूसरी बुराइयों पर पहले नियन्त्रण लगाये हुए थे। आज समाज में संयम और सदाचार को रूढ़िवादिता समझा जाता है। धीरे–धीरे जासूसी उपन्यासों, अश्लील साहित्य, डेटिंग केन्द्रों तथा रोमांटिक मनोरंजन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इन साधनों में होने वाली प्रत्येक वृद्धि से मादक द्रव्य व्यसन को प्रोत्साहन मिलता है। बहुत–से तथाकथित संतों और बुद्धिवादियों ने यौनिक व्यवहारों के उन्मुक्त एवं बन्धनरहित दर्शन का प्रचार करके अप्रत्यक्ष रूप से मादक द्रव्य व्यसन को बढ़ाने में योगदान दिया है।

समाज–विरोधी तत्वों के निहित स्वार्थ कृ भारत में मादक पदार्थों के बढ़ते हुए सेवन का एक प्रमुख कारण समाज–विरोधी तत्वों के निहित स्वार्थ भी हैं। जो लोग स्मैक, हीरोइन, चरस, गाँजे और अफीम की तस्करी में लगे हुए हैं, वे सदैव यह प्रयत्न करते हैं कि इनकी खपत में अधिक से अधिक वृद्धि हो । परिणामस्वरूप अनेक लोगों के माध्यम से जुए के अड्डों, शराबखानों और विद्यार्थी समूहों के बीच नये नशीले पदार्थों के प्रति जिज्ञासा ही पैदा नहीं की जाती बल्कि कभी–कभी इन पदार्थों का मुफ्त वितरण भी करवाया जाता है। एक बार इनका सेवन कर लेने के बाद बहुत–से व्यक्ति इनके आदी बन जाते हैं। ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जहाँ तथाकथित आधुनिक युवक अथवा निम्न आर्थिक वर्ग के लोग सम्भ्रान्त परिवार के युवा लड़कों और लड़कियों को मादक पदार्थों का सेवन इसलिए कराते हैं, जिससे इनकी आदत पड़ जाने के बाद वे उनके पैसे का लाभ उठाकर स्वयं भी मादक पदार्थों की सुविधा

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

प्राप्त करते रहें। अनेक दवा विक्रेता भी अपने आर्थिक लाभ के लिए मादक पदार्थ सरलता से उपलब्ध कराते रहते हैं जिससे इस समस्या को और अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

चुनाव की राजनीति– संसार के लगभग सभी देशों में चुनाव भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देने का प्रमुख साधन बने हुए हैं लेकिन भारत में चुनावों के समय मद्यपान को जिस प्रकार खुलकर प्रोत्साहन दिया जाता है, वह स्वयं में अत्यधिक दुःखद घटना है। यह सर्वविदित है कि विगत चुनावों में अनेक स्थानों पर लागू मद्यनिषेध को या तो समाप्त कर दिया गया अथवा अधिकारियों द्वारा वहाँ शराब पीने की खुली छूट दे दी गई। स्वयं चुनावों के प्रत्याशियों तथा उनके समर्थकों द्वारा, मुख्य रूप से पिछड़े वर्गों तथा अनुसूचित जातियों वाले क्षेत्रों में पानी की तरह शराब बाँटी जाती है और नशे की हालत में उनसे अपनी स्वार्थसिद्धि करवाई जाती है। अपने बहशी स्वार्थ में नेता वर्ग यह भूल जाता है कि मद्यपान की नींव पर खड़ा यह राजनीतिक महल कभी उन्हीं के द्वारा बनाये गये शराबियों द्वारा नशे की हालत में तोड़ा भी जा सकता है।

मादक द्रव्य व्यसन के उपर्युक्त सभी कारणों से कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। सर्वप्रथम यह कि मादक पदार्थों का सेवन व्यक्ति की एक आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसका सबसे मुख्य कारक एक दोषपूर्ण सामाजिक पर्यावरण है। दूसरी बात यह है कि अधिकांश व्यक्ति एक फैशन के रूप में अथवा दूसरों से अपनी स्वार्थसिद्धि करने के लिए मादक पदार्थों का उपयोग आरम्भ करते हैं, जो धीरे–धीरे उनकी आदत का अंग बन जाती है। तीसरा तथ्य यह है कि व्यक्ति की कठिनाइयाँ उसे तब तक नशीले पदार्थों की ओर प्रेरित नहीं कर पातीं जब तक कि व्यक्ति स्वयं भी मानसिक रूप से कुछ कमजोर न हो। इस प्रकार मादक द्रव्य व्यसन के कारणों की व्याख्या अनेक दशाओं के संयुक्त प्रभाव के सन्दर्भ में ही की जानी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण दूरदर्शन अन्धी गलियाँ दिनांक 10 अगस्त 1986.
2. महिलाएं भी मादक पदार्थ की गिरफ्त में दैनिक जागरण, दिनांक 21–8–1997.
3. W. A. Bonger, Criminality and Economic Conditions, E. H. Starling. The Action of Alcohol on Man, E. C. Caltin, 'Alcoholism in The Encyclopaedia of the Social Sciences.
4. Elliott and Merrill, Social Disorganization, p. 198.

*****